

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 15, मरकुस 9:2-50, रूपांतरण, दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़का, शिष्यत्व

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह मार्क 9:2-50, रूपांतरण, दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़का, शिष्यत्व पर सत्र 15 है।

मैं आपके साथ फिर से आकर खुश हूँ क्योंकि हम मार्क के सुसमाचार पर काम करना जारी रखते हैं।

आज, हम मार्क अध्याय 9 में प्रवेश कर रहे हैं। विशेष रूप से, हम श्लोक 2 से शुरू करेंगे। लेकिन जैसे ही हम मार्क अध्याय 9 के बारे में सोचना शुरू करते हैं, पहली घटना जिस पर हम विचार करने जा रहे हैं, वह अधिक प्रसिद्ध घटनाओं में से एक है, यीशु का रूपांतरण। जब हम रूपांतरण के माध्यम से काम करते हैं, तो हमें याद आता है कि हम इसे अपने आप में एक घटना के रूप में नहीं बल्कि इस बात के रूप में भी काम कर रहे हैं कि कैसे मार्क हमें रूपांतरण के लिए तैयार कर रहा है और रूपांतरण स्वयं हमें किस चीज के लिए तैयार करता है। तो, आइए पाठ पढ़ें, यह हमारा रिवाज रहा है, और फिर चर्चा करें कि इसमें क्या है।

इसलिए, हम श्लोक 2 से शुरू करते हैं, और छह दिनों के बाद यीशु ने अपने साथ पतरस, याकूब और यूहन्ना को लिया और उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उनके सामने उसका रूप बदल गया। और उसके कपड़े चमकने लगे, बहुत सफ़ेद, जैसे कि धरती पर कोई भी उसे सफ़ेद नहीं कर सकता था। एलिय्याह मूसा के साथ उनके सामने प्रकट हुआ, और उन्होंने यीशु से बात की।

पतरस ने यीशु से कहा, “हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा है। हम तीन मण्डप बनाएँ, एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये; क्योंकि वह नहीं जानता था कि क्या उत्तर दे।”

वे डर गए। और एक बादल ने उन्हें ढक लिया, और बादल में से एक आवाज़ आई, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी बात सुनो।” और अचानक, चारों ओर देखने पर, उन्होंने उसके साथ यीशु को छोड़कर किसी को नहीं देखा।

और जब वे पहाड़ से उतर रहे थे, तो उसने उन्हें आदेश दिया कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुआओं में से न जी उठे, तब तक वे किसी को न बताएं कि उन्होंने क्या देखा है। इसलिए, उन्होंने इस मामले को अपने तक ही सीमित रखा, और यह सवाल किया कि मरे हुआओं में से जी उठने का क्या मतलब हो सकता है। और उन्होंने उससे पूछा, शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह को आना चाहिए, कि पहले एलिय्याह को आना चाहिए? और उसने उनसे कहा, एलिय्याह सब कुछ बहाल करने के लिए पहले आता है।

और मनुष्य के पुत्र के बारे में यह कैसे लिखा गया है कि वह बहुत सी पीड़ाएँ झेलेगा और उसके साथ घृणा की जाएगी? लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि एलिय्याह आ गया है, और उन्होंने उसके साथ जो चाहा वैसा ही किया, जैसा उसके बारे में लिखा है। जब हम यहाँ रूपांतरण की बात करते हैं, तो एक बात जो तुरंत सामने आती है वह यह है कि इस घटना और मूसा के पहाड़ पर चढ़ने के बीच कुछ दिलचस्प समानताएँ हैं। उदाहरण के लिए, यीशु अपने साथ शिष्यों को ऊपर ले जाता है।

वह अपने तीन शिष्यों को यहाँ ले जाता है जिन्हें हम उसके आंतरिक घेरे के हिस्से के रूप में जानते हैं। मूसा भी पहाड़ पर चढ़ जाता है, और अपने साथ तीन अनाम व्यक्तियों को ले जाता है, साथ ही 70 अन्य लोगों को भी। यीशु का रूप बदल जाता है।

उसके कपड़े चमकते हुए सफ़ेद हो जाते हैं। यहाँ तक कि मार्क भी हमें इस बात का सबूत देता है कि यह इतना सफ़ेद है कि इसे ब्लीच करके बनाना नामुमकिन था। जब मूसा परमेश्वर से बात करने के बाद पहाड़ से नीचे उतरता है तो उसकी त्वचा चमक उठती है।

और दोनों ही जगह परमेश्वर एक छायादार बादल में प्रकट होता है। पुराने नियम में, अगर आप चाहें तो, एक ईश्वरीय दर्शन है, लेकिन यहाँ भी है। हम कुछ लोगों को आश्चर्यचकित होते हुए भी देखते हैं।

शिष्य जो कुछ हुआ उससे आश्चर्यचकित हैं, और जब लोग मूसा को नीचे आते देखते हैं तो वे भी आश्चर्यचकित हो जाते हैं। लेकिन मूसा के इन संदर्भों और समानताओं के बीच, और कुछ और भी हैं; यह निश्चित रूप से इस अर्थ में एक स्थान है कि कैसे मूसा का क्षण यीशु के साथ यहाँ जो हो रहा है उससे कम है। इसलिए, जैसा कि हम इस पर विचार करते हैं, मैं इनमें से कुछ तत्वों को दिखाने की कोशिश करना चाहता हूँ और यह कि वे कैसे काम करते हैं।

आप जानते हैं, हम जिस चीज़ पर काम कर रहे हैं, वह यह है कि, फिर से, ये पहले तीन, हम अभ्यस्त हैं, ये वे लोग हैं जिन्हें यह देखने की अनुमति है कि जब यार्डर की बेटी मर गई थी, तो उसके साथ क्या हुआ था। और उन्होंने वह अद्भुत चमत्कार देखा है। अब उन्होंने यह रूपांतरण देखा है।

ये वे तीन लोग भी होंगे जिन्हें यीशु अपने साथ गेथसेमेन में थोड़ा आगे ले जाएगा। जब हम सोचते हैं कि ये तीनों क्या देख रहे हैं, तो हमें यह भी याद रखना चाहिए कि जिस भ्रम को ये तीनों प्रदर्शित करते हैं, उसके संदर्भ में, पतरस अक्सर बारहों के प्रवक्ता के रूप में होता है, लेकिन बाद में यूहन्ना भी कुछ ऐसे प्रश्न पूछेगा जो यह दर्शाएंगे कि वे ये सभी आश्चर्यजनक चीज़ें देख रहे हैं, लेकिन वे अभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। दिलचस्प बात यह है कि जब वे इस पर्वत पर चढ़ रहे थे, तो मार्क हमें बताता है कि एलिय्याह मूसा के साथ और फिर यीशु मूसा के साथ यीशु के साथ बात करते हुए वहाँ देखे गए थे।

तो यहाँ, यीशु का रूपान्तरण हो चुका है, और वह महिमा में है। विचार का एक हिस्सा यह सोचना है कि क्या उन्होंने जो वास्तव में देखा है वह यीशु की महिमा का लगभग सही अर्थ है, या क्या यीशु ने कभी-कभी उस शानदार व्यक्ति का अनुमान लगाया है जो वह महिमा में आने पर होगा?

वास्तव में क्या देखा जा रहा है? चाहे जो भी हो, यह महिमा ही है जो देखी जा रही है। और आपके पास एलिय्याह और मूसा हैं।

अब क्रम दिलचस्प है। मूसा के साथ एलिय्याह। वास्तव में, जैसा कि आप उम्मीद करते हैं, मूसा की प्रधानता के कारण आमतौर पर मूसा के साथ एलिय्याह ही होता है।

मुझे लगता है कि मार्क ने एलिय्याह को पहले रखा है, जबकि अन्य ने ऐसा नहीं किया है। यहाँ पर जो युगांतकारी क्षण है, उस पर जोर देने का एक हिस्सा एलिय्याह द्वारा की गई बातचीत है। लेकिन यह तथ्य कि एलिय्याह और मूसा वहाँ हैं, आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए, और हमें यह सवाल पूछने की ज़रूरत है कि वे दोनों क्यों हैं? और मुझे नहीं लगता कि इसका उत्तर यह है कि वे कानून और भविष्यवक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मुझे नहीं लगता कि यह ज़रूरी उत्तर है या कम से कम पूरा उत्तर है। मूसा निश्चित रूप से कानून का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन एलिय्याह भविष्यवक्ताओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक अजीब विकल्प होगा। वह एक भविष्यवक्ता था।

लेकिन जब हम व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के बारे में सोचते हैं, तो हम आमतौर पर लिखी गई भविष्यवाणियों की किताबों के बारे में सोचते हैं। इसलिए, यशायाह जैसी किताब का ज़्यादा इंतज़ार किया जा सकता था। फिर भी, यह उतना स्पष्ट नहीं है क्योंकि मूसा को एक भविष्यवक्ता माना जाता है।

तो, ऐसा नहीं है कि मूसा के पास भविष्यसूचक पदनाम नहीं है। वास्तव में, व्यवस्थाविवरण 18 में उस व्यक्ति के बारे में बताया गया है जो भविष्यवक्ता मूसा की तरह आएगा। और मुझे लगता है कि शायद यहीं से हम कुछ कारणों को समझना शुरू करते हैं कि एलिय्याह और मूसा यहाँ क्यों हो सकते हैं।

दोनों को ही पहाड़ पर ईश्वरीय दर्शन का अनुभव हुआ था। दोनों ही युगांतशास्त्रीय प्रत्याशा में कारक हैं। मलाकी 4:5 एलिय्याह और मूसा को एलिय्याह की वापसी के रूप में बताता है।

और एलिय्याह के दिनों की प्रतीक्षा करें। व्यवस्थाविवरण 18 में मूसा जैसा भविष्यवक्ता आने के बारे में बताया गया है। इसलिए, एलिय्याह और मूसा दोनों ही दो ऐसे व्यक्ति हैं जो वास्तव में परमेश्वर के कार्य की आशा, उस युगांतकारी घटना के बारे में बताते हैं जो घटित होने वाली थी।

वास्तव में, उन दोनों के वहाँ होने से आपको यह आभास होता है कि यह प्रत्याशित चरमोत्कर्ष अब निकट है। और इसलिए, मुझे लगता है कि जब हम यह सवाल पूछते हैं कि एलिय्याह और मूसा क्यों, तो इसका कारण यह है कि वे दो व्यक्ति उस महान योजना में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो अब अंत की ओर बढ़ रही है। और जो लोग उसके साथ होंगे वे उस युगांतिक वास्तविकता का हिस्सा होंगे।

अब, पीटर की प्रतिक्रिया मुझे बहुत दिलचस्प लगती है। पीटर को भी उसकी प्रतिक्रिया के लिए बदनाम किया जाता है। मुझे लगता है, कुछ हद तक, वह जितना अच्छा कर सकता है, उतना करता है, शायद उस पल में।

सबसे पहले, पतरस ने यीशु से कहा, रब्बी, और मुझे नहीं लगता कि रब्बी का मतलब किसी तरह से समझ न पाना होना चाहिए। मेरा मतलब है, यीशु सिखा रहे थे। मुझे लगता है कि यहाँ रब्बी एक स्वीकार्य पदनाम है।

वह कहता है, चलो तीन तंबू बनाते हैं। तो, आप इसे तीन झोपड़ियाँ या तीन तंबू भी कह सकते हैं। एक तुम्हारे लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलिय्याह के लिए।

मुझे लगता है कि कुछ मामलों में, हम समझते हैं कि पतरस सबसे पहले जो कर रहा है, वह यीशु के बारे में अविश्वसनीय रूप से उच्च कथन है। यहाँ एलिय्याह और मूसा थे, अतीत के ये महान व्यक्ति, जो अब वर्तमान में दिखाई दे रहे हैं। और पतरस उनमें यीशु को गिन रहा है।

जो कि अपने आप में यीशु के बारे में एक बहुत ही आश्चर्यजनक कथन है। लेकिन मुझे लगता है कि ये बूथ भी दिलचस्प हैं क्योंकि ये तंबू, ये तम्बू, यहाँ बूथों के त्योहार के बारे में सोचना मुश्किल नहीं है क्योंकि यह पीटर की सोच का हिस्सा है। हमारे कैलेंडर के अनुसार आमतौर पर सितंबर या अक्टूबर में अंगूर की फसल के त्योहार के बाद और समर्पण उत्सव से दो महीने पहले झोपड़ियों का पर्व मनाया जाता था।

यह प्रायश्चित दिवस के बाद मनाया गया और धार्मिक त्योहारों के वार्षिक चक्र के समापन को चिह्नित करता है। लेकिन जो बात दिलचस्प है, मुझे लगता है कि जिस पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है, वह है झोपड़ियों का यह पर्व, यह क्या करता है, और इसे पूरे शास्त्र की कहानी में कैसे प्रस्तुत किया गया है। यह तब शुरू होता है जब आप लैव्यव्यवस्था और संख्याओं को एक के रूप में देखते हैं; हम जंगल में भटक रहे लोगों के लिए भगवान के प्रावधान की मांग कर रहे हैं, जहां वे इन झोपड़ियों में रहते थे। लेकिन फिर यह नहेमायाह और फिर जकर्याह में होता है, जो कि केवल जो हुआ उसकी याद से कहीं अधिक है, बल्कि वर्तमान निर्भरता और भगवान पर भरोसा करने की घोषणा बन जाता है, जो उस त्योहार का हिस्सा बन जाता है जिसे वह पूरा करना जारी रखेगा।

इस तरह यह इस फसल के विचार से जुड़ जाता है, कि वह अपने लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना जारी रखेगा। लेकिन जकर्याह के पहलुओं के साथ जो खींचे जाते हैं, इस त्योहार का एक युगांत संबंधी पहलू भी है। और मान लीजिए कि मैं हमसे यह सोचने के लिए कह रहा हूँ कि शराब का यह त्योहार कब भगवान की अपने लोगों के साथ बातचीत और कार्य करने की पूरी कहानी को निर्गमन की घटना से लेकर लोगों को निरंतर सहारा देने और भविष्य की ओर देखने वाली आशा तक ले जाता है।

और मुझे आश्चर्य होता है कि जब पीटर कह रहा है, चलो हम तीन तंबू या तंबू बनाते हैं, तो क्या वह यहूदी त्योहारों के संदर्भ में अतीत, वर्तमान और भविष्य की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति को आकर्षित करने की पूरी कोशिश कर रहा है, यह कहकर कि चलो हम तीन तंबू बनाते हैं, चलो

हम यहाँ एक तंबू का प्रतिनिधित्व करते हैं। और इसलिए, जब मैं पीटर की प्रतिक्रिया के बारे में सोचता हूँ, तो मैं उसे इस क्षण पर प्रतिक्रिया करने का सबसे अच्छा तरीका जानने की कोशिश करने के लिए कुछ श्रेय देना चाहता हूँ। लेकिन, निश्चित रूप से, वह यहाँ कुछ महत्व को भूल जाता है।

उदाहरण के लिए, उसकी एक गलती यह है कि वह एक के बजाय तीन बनाना चाहता है। वह इस बात को नहीं समझ पा रहा है कि एलिय्याह और मूसा का वहाँ होना, यीशु के कार्य की पुष्टि करने में, गवाही है। यह एलिय्याह, मूसा और यीशु नहीं है, बल्कि एलिय्याह और मूसा हैं जो यीशु के आगमन के साथ अब जो हो रहा है, उसकी गवाही और साक्ष्य दे रहे हैं।

और मुझे लगता है कि उदाहरण के लिए, तनाव का विषय यह है कि क्षण समाप्त होने के बाद भी, इस बात पर जोर दिया जाता है कि यीशु अभी भी वहाँ है, कि यीशु बना हुआ है, कि इसका एक महत्व है। लेकिन निश्चित रूप से, आवाज़ इसे भी सामने लाती है। तो, आपके पास पद 6 में पतरस है, जो बस यह पता लगाने की कोशिश कर रहा है कि क्या करना है।

उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह बहुत डरा हुआ है। और फिर, लगभग इस दृश्य को बाधित करते हुए, एक बादल ने उन्हें घेर लिया और यह आवाज़ आई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, भजन 27 की प्रतिध्वनि। अब, यह पहली बार नहीं है जब हमने मार्क के सुसमाचार में यह घटना देखी है।

यह बपतिस्मा के समान ही है, जहाँ स्वर्ग से आवाज़ आती है और स्वर्ग को अलग कर दिया जाता है, और दिव्य गवाही इस शाही भजन में आती है जो यह घोषणा करती है कि यीशु कौन है। और इसलिए हमें यह याद दिलाया जाता है कि यहाँ किसका महत्व है। मैंने यह भी देखा कि मुझे लगता है कि उसे सुनने का यह विचार महत्वपूर्ण हो जाता है।

पिता बेटे के शब्दों का समर्थन कर रहा है, उनकी वकालत कर रहा है। अब इस मोज़ेक छवि में, पहाड़, ईश्वरीय दर्शन, गवाह को लाना, वे तत्व जिनके बारे में हमने पहले बात की थी, आपके पास व्यवस्थाविवरण 18 15 है। तुम्हारा परमेश्वर यहीवा तुम्हारे बीच से मेरे जैसा एक नबी तुम्हारे लिए खड़ा करेगा।

यह मूसा है जो तुम्हारे भाइयों में से मेरे जैसा है। तुम्हें उसी की बात सुननी चाहिए। और मुझे लगता है कि यहाँ जो कुछ है वह यह स्पष्ट घोषणा है कि यीशु ही वह है जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्थाविवरण 18 में बात की थी।

इसे नज़रअंदाज़ करना मुश्किल है। यह हमें उस बात की याद दिलाता है जिस पर मार्क ने पूरे लेख में जोर दिया है: कि यीशु के पास अधिकार था, शास्त्रियों के विपरीत।

शास्त्रियों ने इस बात पर बहस की और चर्चा की कि मूसा का क्या मतलब था। और यहाँ वह व्यक्ति है जो मूसा से भी अधिक महत्वपूर्ण है, उसे उसकी बात सुनने के लिए कहा जा रहा है। और इसलिए, हमारे पास यह दृश्य है और फिर जब वे पहाड़ से नीचे आ रहे हैं, तो वह तीनों से कहता है कि वे किसी को न बताएं।

जब तक मनुष्य का पुत्र मृतकों में से जी नहीं उठता, तब तक किसी को भी इस महिमामय रूपांतरण के बारे में नहीं बताना चाहिए जिसे उन्होंने देखा है या मूसा या एलिय्याह के बारे में नहीं बताना चाहिए। और इसलिए आपके पास इस मसीहाई रहस्य में यह रिश्ता भी है जिसे यीशु जोड़ना चाहते हैं, मुझे लगता है कि मूसा और एलिय्याह और आवाज़ में परमेश्वर जो पुष्टि कर रहे हैं उसे केवल महान मनुष्य के पुत्र, यीशु के पुनरुत्थान के बाद ही पूरी तरह से और सही मायने में समझा जा सकता है। और इसलिए, आपके पास इन्हें एक साथ लाने का तरीका है।

और यहाँ तक कि यीशु द्वारा पुनरुत्थान के बारे में बात करना भी एक युगान्तिक समझ होगी। और शायद यही कारण है कि शिष्यों को कुछ भ्रम हुआ। इसलिए, पद 10 में, उन्होंने इस मामले को अपने तक ही सीमित रखा।

यह उन कुछ अवसरों में से एक है जहाँ यीशु किसी को किसी बात पर चुप रहने के लिए कहते हैं, और वे वास्तव में चुप रहते हैं। इसलिए, हम उन्हें श्रेय देना चाहते हैं। लेकिन मृतकों में से जी उठने का क्या मतलब हो सकता है, इस पर सवाल उठाना।

और मुझे लगता है कि हमारे लिए यह याद रखना ज़रूरी है कि जब हम शिष्यों को देखते हैं और उन्हें यह समझ में नहीं आता कि यीशु क्या कह रहे हैं जब वह इस बारे में बात करते रहते हैं कि वह तीसरे दिन फिर से कैसे जी उठेंगे या मनुष्य के बेटे को फिर से जी उठना चाहिए। उनके लिए, पुनरुत्थान कुछ ऐसा नहीं था जो इतिहास के बीच में एक व्यक्ति के साथ हुआ। पुनरुत्थान कुछ ऐसा था जो इतिहास के अंत में परमेश्वर के वफादार लोगों के साथ होना चाहिए था।

और इसलिए जब वे यहाँ बैठकर इस बारे में बात कर रहे हैं कि आपको क्या लगता है कि जब तक मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं जी उठता, तब तक उसका क्या मतलब है, ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके दिमाग में इस बात की कोई जगह नहीं है कि चीजों को कैसे आगे बढ़ना चाहिए। एक, मनुष्य के पुत्र के साथ जुड़ा हुआ पुनरुत्थान फिट नहीं बैठता। लेकिन साथ ही, मृतकों में से एक विशेष व्यक्ति का उठना, सामूहिक के विपरीत, कुछ ऐसा होगा जिससे वे संघर्ष करेंगे, और उन्हें वह लाभ नहीं मिलेगा जो हमें इस पर पीछे मुड़कर देखने और यह जानने का है कि यीशु किस बारे में बात कर रहे हैं।

उन्होंने ऐसा नहीं किया। और मुझे लगता है कि हमें हमेशा उस कठिनाई को पहचानना चाहिए जो उन्हें हुई होगी। बेशक, पुनरुत्थान के इन संदर्भों के साथ, एलिय्याह के इन संदर्भों और एलिय्याह के इस दर्शन के साथ, यह स्वाभाविक है कि उन्होंने उससे इस बारे में पूछा कि एलिय्याह इस सब में क्या भूमिका निभाता है।

ध्यान रखें कि एलिय्याह की भूमिका के बारे में यह सवाल शायद इस तथ्य से भी उपजा है कि कुछ लोग कह रहे हैं कि यीशु ही एलिय्याह है। हम पहले ही देख चुके हैं कि जब यीशु ने शिष्यों से पूछा, भीड़ मुझे कौन कहती है? और उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ लोग कहते हैं कि तुम एलिय्याह हो।" तो, एलिय्याह का माहौल निश्चित रूप से सही है।

और इसलिए, उन्होंने उससे पूछा, शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलियाह को पहले आना चाहिए? यीशु का जवाब दिलचस्प है। और वास्तव में, मुझे लगता है कि तर्क को समझना कभी-कभी थोड़ा मुश्किल होता है। यीशु पहले जवाब देते हैं, ऐसा लगता है कि वे शास्त्रियों की बात की पुष्टि कर रहे हैं, जो एक दुर्लभ घटना है।

यीशु आमतौर पर शास्त्रियों की सत्यता की पुष्टि नहीं करते हैं, लेकिन वे कहते हैं कि एलियाह सभी चीजों को बहाल करने के लिए पहले आता है। अब, यह विचार कि एलियाह सभी चीजों को बहाल करने के लिए पहले आता है, मलाकी 4:5, 6 से आता है, जिसमें लिखा है, देखो, मैं प्रभु के उस महान और भयानक दिन के आने से पहले तुम्हारे पास एलियाह नबी को भेजूंगा। वह माता-पिता के दिलों को उनके बच्चों की ओर और बच्चों के दिलों को उनके माता-पिता की ओर मोड़ देगा, अन्यथा मैं आऊंगा और देश को पूरी तरह से नष्ट कर दूंगा।

एलियाह का जाना उसके आगमन के रहस्य को भी पुष्टि करता है, 2 राजा 2:11 में और एलियाह कैसे चला जाता है। यह प्रश्न तब एलियाह के पहले आने के बारे में हो जाता है, और यीशु इसकी पुष्टि करते हैं। वह यहाँ तक कहते हैं कि एलियाह सब कुछ बहाल करने के लिए पहले आता है।

लेकिन फिर भी, उस कथन को कहने के बाद और वास्तव में यह परिभाषित किए बिना कि सभी चीजों को बहाल करने का क्या मतलब है, वह फिर मनुष्य के पुत्र के बारे में एक बयान जारी करता है। और मनुष्य के पुत्र के बारे में यह कैसे लिखा गया है कि उसे बहुत सी चीजें सहनी चाहिए और उसके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए? यह बहस के बिंदुओं में से एक था। यीशु कह रहे हैं कि यह आवश्यक है कि मनुष्य के पुत्र को नेताओं द्वारा अस्वीकार कर दिया जाए और मार दिया जाए।

शिष्यों को यह समझने में कठिनाई हो रही है कि मनुष्य के पुत्र की महान विजय को ऐसी भयानक भविष्यवाणी से कैसे जोड़ा जा सकता है। और मेरा मानना है कि यीशु यहाँ जो कर रहे हैं वह यह है कि पहले एलियाह के कथन की पुष्टि करते हुए लेकिन फिर इसे मनुष्य के पुत्र पर अपनी शिक्षा से जोड़ते हुए शिष्यों को चुनौती दे रहे हैं कि वे इस बात पर पुनर्विचार करें कि एलियाह सभी चीजों को बहाल करने के लिए आ रहा है, इसका वास्तव में क्या मतलब है। और वह श्लोक 13 में कहते हैं, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि एलियाह आ चुका है।

इसे यीशु के इस संदर्भ के रूप में देखा जाता है कि एलियाह का यह चरित्र जॉन बैपटिस्ट था। जॉन बैपटिस्ट एलियाह की इस आवश्यकता को पूरा कर रहा है। एलियाह आ चुका है, और उन्होंने उसके साथ जो चाहा, वैसा ही किया, जैसा उसके बारे में लिखा है।

यह दोनों के बीच का संबंध होगा; यह जॉन द बैपटिस्ट के बारे में कथन होगा, जिसे हेरोदेस एंटिपस ने मार डाला था। और इसलिए, इस कथन में, यीशु यह कह रहे हैं कि जिस तरह आपको मनुष्य के पुत्र द्वारा लाई गई जीत पर पुनर्विचार करना चाहिए, उसी तरह आपको एलियाह के अग्रदूत के बारे में भी पुनर्विचार करना चाहिए और यह कैसा दिखेगा। और इसलिए, यदि सभी चीजों की बहाली सभी चीजों पर महान जीत की ओर इशारा कर रही है, लेकिन फिर भी सभी

चीजों पर महान जीत दुख और मृत्यु में है, तो यह समझ में आता है कि बहाली भी इसी तरह की आड़ में है।

एलिय्याह का चरित्र भी इसी प्रकार कष्ट सहेगा; दूसरे शब्दों में, सभी चीजों की महान पुनर्स्थापना को मसीह द्वारा क्रूस पर किए गए कार्यों से समझा जा सकता है, और क्रूस पर मनुष्य के पुत्र का महान कष्ट वास्तव में महान विजय है।

और एलिय्याह, जॉन बैपटिस्ट उस ओर इशारा कर रहा है जो पुनर्स्थापना है। और जॉन बैपटिस्ट लोगों को आगमन के लिए तैयार कर रहा है। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह इस तरह है, जो यीशु उन्हें समझाने की कोशिश कर रहा है कि यह कथन कि एलिय्याह सभी चीजों को पुनर्स्थापित करने के लिए पहले आता है, गलत नहीं है, लेकिन यह कि उनकी समझ गलत है।

हम मार्क 13 में भी कुछ ऐसा ही घटित होते देखेंगे जब हम उस अध्याय पर पहुँचेंगे। मैं यहाँ मार्क अध्याय 9 के बारे में सोचना जारी रखना चाहता हूँ और यहाँ श्लोक 14-29 को देखना चाहता हूँ। और जब वे शिष्यों के पास आए तो उन्होंने देखा कि उनके चारों ओर एक बड़ी भीड़ है और शास्त्री उनसे बहस कर रहे हैं।

और इसलिए, दृश्य सही है, यह शिष्यों के पास लौटने का है। और तुरन्त सारी भीड़ ने उसे देखकर बहुत आश्चर्यचकित होकर उसके पास दौड़कर उसका अभिवादन किया। और उसने पूछा, तुम उनसे किस विषय पर बहस कर रहे हो? और भीड़ में से किसी ने कहा, गुरु, मैं अपने बेटे को आपके पास लाया हूँ क्योंकि उसमें एक आत्मा है जो उसे गूंगा बना देती है, और जब भी वह उसे पकड़ती है, उसे नीचे गिरा देती है, और वह झाग से भर जाता है और अपने दाँत पीसता है और कठोर हो जाता है।

इसलिए मैंने तुम्हारे चेलों से उसे निकालने के लिए कहा, लेकिन वे उसे निकाल नहीं पाए। और उसने उनसे कहा, "हे अविश्वासी लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? मैं कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ।" और वे लड़के को उसके पास ले आए, और जब आत्मा ने उसे देखा, तो तुरन्त लड़के को मरोड़ दिया, और वह ज़मीन पर गिर पड़ा और मुँह से झाग बहाते हुए लोटने लगा।

यीशु ने अपने पिता से पूछा कि यह उसके साथ कब से हो रहा है। और उसने कहा, बचपन से। और इसने उसे नाश करने के लिए आग और पानी में फेंक दिया है। लेकिन अगर आप कुछ कर सकते हैं, तो हम पर दया करें और हमारी मदद करें।

यीशु ने उससे कहा, "यदि तू कर सके, तो विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है।" तुरन्त उस लड़के के पिता ने चिल्लाकर कहा, "मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास का उपाय कर।" जब यीशु ने देखा कि भीड़ दौड़कर इकट्ठी हो रही है, तो उसने अशुद्ध आत्मा को डाँटा और कहा, "हे गूँगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ और उसमें फिर कभी प्रवेश न कर।"

वह चिल्लाने और उसे बहुत मरोड़ने के बाद बाहर आया, और लड़का मुर्दे की तरह हो गया। इसलिए अधिकांश लोगों ने कहा कि वह मर गया है। लेकिन यीशु ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया, और वह जी उठा।

जब वह घर में दाखिल हुआ, तो उसके चेलों ने उससे अकेले में पूछा, “ हम उसे क्यों नहीं निकाल पाए?” उसने उनसे कहा, “ इस जाति को प्रार्थना के अलावा किसी और तरीके से नहीं निकाला जा सकता।” वे वहाँ से आगे बढ़े और गलील से होते हुए गुज़रे, और वह नहीं चाहता था कि कोई जाने। 14-29 में यह अंश दिलचस्प है।

दिलचस्प। क्योंकि हम रूपांतरण के इस महान क्षण से वापस यीशु की सेवकाई के रोज़मर्रा के दौर में आ गए हैं, जिसमें शिष्यों को कुछ सही नहीं मिल रहा था या वे भ्रमित थे और उन्हें दुष्टात्माओं को भगाने में मदद और सहायता की ज़रूरत थी। हमारे पास इस बात के सबूत भी हैं कि यह दुष्टात्मा इस लड़के के बचपन से ही मौजूद है और जैसा कि हम उम्मीद करते हैं, वह विनाशकारी है।

हम लगातार राक्षसों को विनाशकारी होने की कोशिश करते हुए देखते हैं, और यहाँ, हमारे पास भी कुछ ऐसा ही है। वह लड़के को नष्ट करने की कोशिश कर रहा है, उसे आग में फेंक रहा है, उसे पानी में फेंक रहा है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि दो अंतःक्रियाएँ हैं।

सबसे पहले यह पहली बातचीत इस आदमी के साथ है, जो मदद के लिए विनती कर रहा है। वह शिष्यों के पास गया, और वे ऐसा करने में सक्षम नहीं थे। हम जानते हैं कि शिष्य अभी-अभी एक सेवकाई अनुभव से आए हैं जहाँ वे राक्षसों को निकालने में सक्षम थे। और फिर हमारे पास है, और इससे पहले कि यीशु उस आदमी से बात करने के लिए मुड़े, हमें यीशु द्वारा यह फटकार मिलती है, हे अविश्वासी पीढ़ी, जिसके बारे में, जैसा कि हमने बात की है, मैं वास्तव में मानता हूँ कि यह नकारात्मक पीढ़ी की भाषा वर्तमान में जो कुछ हो रहा है उसे जंगल में भटक रहे इस्राएलियों के संदेह से जोड़ती है।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह हे अविश्वासी पीढ़ी, इस वर्तमान पीढ़ी में अविश्वास है। लेकिन फिर वह इस पिता के साथ इस में बदल जाता है और पिता जिसने इस लड़के को यीशु के पास लाने की कोशिश की है, अगर आप चाहें तो, वह सवाल पूछता है, लेकिन अगर आप कुछ कर सकते हैं, तो हमारी मदद करें। और यीशु उस जवाब पर क्रोधित होता है और यह अगर आप कर सकते हैं भाषा है।

यह इस बात के बिल्कुल विपरीत है कि अगर आप तैयार हैं, तो मैं साफ हो जाऊंगा। यहाँ अगर आप कर सकते हैं, तो कृपया ऐसा करें। अगर आप कर सकते हैं वाली भाषा से संकेत मिलता है कि उस आदमी को इस बात की चिंता है कि यीशु की शक्ति पर्याप्त हो सकती है।

और उसके मन में यह चिंता इसलिए है क्योंकि शिष्यों ने खुद को इस कार्य के लिए अपर्याप्त दिखाया है। और इसलिए, शिष्यों की यह अक्षमता अब यीशु की अक्षमता की चिंता में बदल गई है। और इसलिए यीशु ने उसे चुनौती दी कि जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है, विश्वास दिखाने की चुनौती है।

हमने मार्क के माध्यम से यह देखा है: यीशु चमत्कार करने से पहले एक मज़बूत प्रतिक्रिया, यीशु में विश्वास की एक स्पष्ट प्रतिक्रिया चाहते हैं। अगर कोई यह विश्वास नहीं करता कि यीशु ऐसा कर सकता है, तो यीशु ऐसा नहीं करता। यही पैटर्न हम मार्क में देख रहे हैं।

और फिर, मुझे लगता है, हमारे पास शायद आस्था के बारे में सबसे महान कथनों में से एक है - एक कथन जो वास्तव में सही प्रतिक्रिया को दर्शाता है। पिता या बच्चा दो बातें चिल्लाते हैं।

पहला, मेरा मानना है। खैर, यह अपने आप में बस एक प्रतिक्रिया हो सकती है, ओह, मैं विश्वास करता हूँ। लेकिन यह दूसरा कथन है जो शायद और भी अधिक विश्वास दिखाता है।

मेरे अविश्वास की सहायता करें। यह विनम्र मान्यता है कि वहाँ विश्वास की कमी है। लेकिन यह विश्वास की कमी उसकी अपनी कमज़ोरी है।

और वह मसीह ही है जो विश्वास को बढ़ा सकता है और उसे टढ़ कर सकता है। और वास्तव में, यह शिष्यत्व के बारे में एक बड़ी पुकार है जो शिष्यों को स्वयं नहीं मिल रही है।

हम देखेंगे कि शिष्य कितनी बार अपनी क्षमताओं पर काफी आश्वस्त होते हैं। वे अक्षमताओं के बारे में चिंता की कमी दिखाते हैं। वास्तव में, बाद में उनके कुछ घमंड इस बारे में होते हैं कि कौन महान होगा और कौन सबसे महान होगा या यहां तक कि जब हम पैशन वीक के अंतिम भाग में पहुंचते हैं और पीटर की साहसिक घोषणा कि अगर बाकी सभी लोग पीछे हट जाते हैं तो वह अंत तक यीशु के साथ रहेगा।

वे इस तरह के साहसपूर्ण कथन में काम करते हैं और शायद उन्हें मेरे अविश्वास में मदद की ज़रूरत है। और इसलिए, यीशु ने इस कथन को विश्वास के सबूत के रूप में स्वीकार किया। और वह अशुद्ध आत्मा को फटकार लगाता है।

वहाँ एक आदेश है और उस आदेश की तत्कालता है। अब, यही हम उम्मीद करेंगे। अब, यह पूरा क्षण वास्तव में कुछ ऐसा लगता है जैसा हमने पहले सुसमाचार में देखा है जो पहले आठ अध्यायों की विशेषता है, अगर आप चाहें तो।

लेकिन हम शिक्षण के इस खंड में हैं जहाँ कैसरिया फिलिप्पी से ध्यान यीशु द्वारा शिष्यों को शिक्षा देने पर रहा है। और इस तत्व में जो बात सबसे अलग है, वह है शिक्षण पहलू। तो, भूत भगाने के बाद, हम देखते हैं कि वह घर में प्रवेश करता है और शिष्यों के साथ निजी तौर पर चर्चा करता है।

यहाँ श्लोक 28 को देखते हुए वे पूछ रहे हैं, हम इसे क्यों नहीं निकाल पाए? और जवाब दिलचस्प है। इस तरह की बीमारी को प्रार्थना के अलावा किसी और चीज़ से नहीं निकाला जा सकता। इसलिए, सवाल यह है कि वे ऐसा क्यों नहीं कर पाए जबकि यीशु ऐसा कर पाए।

शिष्यों की असफलता का हृदय यीशु के प्रति इस प्रतिक्रिया में उत्तर का एक हिस्सा हो सकता है। यीशु कहते हैं कि इसे केवल प्रार्थना के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। और मुझे नहीं लगता कि उनका मतलब किसी विशिष्ट सूत्र या कथन से है।

बल्कि, यह प्रार्थना की वह मुद्रा है, वह निर्भरता है जो प्रार्थना है। प्रार्थना तब होती है जब कोई व्यक्ति ईश्वर की ओर अपना चेहरा इस घोषणा में मोड़ता है कि ईश्वर निर्माता है और हम बनाए गए हैं, कि ईश्वर ही वह है जो डिजाइन और निर्देशन करता है, और हमारे पास अपने आप में योगदान करने के लिए कुछ भी नहीं है। और शायद हम यह संकेत प्राप्त कर रहे हैं जब यीशु इस तरह से जवाब देते हैं कि प्रार्थना के अलावा किसी और चीज से इसे बाहर नहीं निकाला जा सकता है कि शिष्य इस बारे में अधिक सोचने लगे थे कि वे अपने दम पर क्या करने में सक्षम थे बजाय इसके कि वे इसमें ईश्वर की शक्ति की आवश्यकता को महसूस करें।

तो, मुझे यह जवाब दिलचस्प लगा। मैं जल्दी से यहाँ आगे बढ़ना चाहता हूँ और अगर हम कर सकें तो शायद अध्याय 9 को पूरा कर लें। तो, मैं श्लोक 30 से 50 तक देखना चाहूँगा।

वे वहाँ से चले गए और गलील से गुज़रे और वह नहीं चाहता था कि कोई जाने क्योंकि वह अपने शिष्यों को सिखा रहा था कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया जाएगा और वे उसे मार डालेंगे और जब वह तीन दिन बाद मारा जाएगा तो वह जी उठेगा। लेकिन वे कहावत को नहीं समझ पाए और पूछने से डरते थे। मैं उन दो आयतों के बारे में थोड़ा बात करना चाहता हूँ।

इन दो आयतों में हम जो बात देखते हैं, वह यह है कि हमारे पास अगली जुनून की भविष्यवाणी है। हम यीशु को ऐसा करते हुए देख रहे हैं। यह आयत 31 में हमारी अगली भविष्यवाणी है।

और इसलिए यहाँ हमारे पास मसीहाई रहस्य के लिए एक कारण भी है, अगर आप इस पहलू में कहें तो वह शिष्यों से कह रहा है कि वे जो जानते हैं उसके बारे में किसी को न बताएं क्योंकि उसके पास ऐसी शिक्षा है जो वह करना चाहता है। और अगर उसकी लोकप्रियता का प्रसार जारी रहता है तो यह इस शिक्षा को रोक सकता है या कम से कम मुश्किल बना सकता है। और इसलिए, वह भविष्यवाणी करता है कि वह उद्धार पाने वाला है।

मुझे लगता है कि यहाँ एक बात पर ध्यान देना ज़रूरी है कि उसे पुरुषों के हाथों में सौंपा जाएगा। मुझे लगता है कि इस भविष्यवाणी में पुरुषों के हाथ संकेत दे सकते हैं कि उसे कौन सौंप रहा है। यह पुरुषों के एक समूह से दूसरे समूह के पुरुषों को सौंपना नहीं है।

ध्यान दें कि यह किसी विशेष समूह द्वारा शासकों या न्यायाधीशों या नेताओं को नहीं सौंपा गया है। यह मनुष्यों के हाथों में है। और मुझे लगता है कि हम यहाँ पद 31 में जो देख रहे हैं वह यह है कि परमेश्वर ही वह है जो वास्तव में मनुष्य के पुत्र को मनुष्यों के हाथों में सौंप रहा है।

मुझे लगता है कि इसके पीछे यही विचार है कि परमेश्वर इस उद्धार का कार्य कर रहा है। और यह वास्तव में यशायाह में पीड़ित सेवक के बारे में कही गई बात से मेल खाता है। कहा जाता है कि उसे छुड़ाया गया।

पॉल बहुत ही समान भाषा का उपयोग उस जगह पर करेगा जहाँ परमेश्वर ही है जो हाथों को सौंपता है। और इसलिए, मुझे लगता है कि हम जुनून के दिव्य आयोजन का भी संकेत पा रहे हैं। और वे उसे मार देंगे।

फिर से, मुझे लगता है कि यह इस बात का सबूत है कि यह प्रारंभिक चर्च की रचना नहीं है, उसे सूली पर चढ़ाने के बजाय उसे मारने की भाषा है, जो कि कोई भी उम्मीद कर सकता था अगर यह दृश्य में एक प्रविष्टि होती। और जब वह तीन दिनों के बाद मारा जाता है, तो वह जी उठेगा। और फिर, श्लोक 33 में, वे कफरनहूम में आए, जो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

यह आमतौर पर वह जगह होती है जहाँ वह गलील में अपने घर पर रहता है। और जब वह घर में था, तो उसने उनसे पूछा, तुम रास्ते में क्या चर्चा कर रहे थे? श्लोक 34 दिलचस्प है कि वे चुप रहे। और मुझे लगता है, जैसा कि हम देखना शुरू कर रहे हैं, शिष्य अक्सर चुप रहते हैं जब उन्हें पता होता है कि इससे कुछ शर्मिंदगी या शर्म जुड़ी हुई है।

लेकिन वे चुप रहे क्योंकि रास्ते में वे एक दूसरे से इस बात पर बहस कर रहे थे कि सबसे महान कौन है। अब एक दूसरे से यह बहस कि सबसे महान कौन है, 21वीं सदी के पश्चिमी संदर्भ में विशेष रूप से अहंकारी लगती है। लेकिन ध्यान रखें कि प्राचीन दुनिया में जहाँ सब कुछ सम्मान और शर्म के रूप में समझा जाता था, वहाँ वे इस बात पर थोड़ा घमंड करते थे कि कौन किस स्थिति में होगा, यह असामान्य नहीं रहा होगा।

और यीशु स्पष्ट रूप से इसके खिलाफ बोलते हैं। लेकिन वे जो कर रहे थे वह उस संस्कृति को दर्शाता है जहाँ सब कुछ एक प्रतिस्पर्धा लगती है। अब उन्हें एहसास हुआ कि यह अनुचित है।

मुझे लगता है कि इसीलिए वे चुप रहे। वे यीशु की शिक्षाओं को इतनी अच्छी तरह से सुन रहे थे कि उन्हें पता था कि जिस बात पर वे बहस कर रहे थे, शायद वह ऐसी बात है जिससे यीशु सहमत नहीं होंगे। और वास्तव में, वह इसे एक शिक्षण क्षण बनाता है।

वह बैठ गया और उन 12 लोगों को बुलाया जिनके पास बैठने का विचार था, जिन्हें लगा कि अब इस पर एक पाठ होने वाला है। और उसने उनसे कहा, अगर कोई पहला होना चाहता है, तो उसे सबसे आखिरी और सबका सेवक होना चाहिए। और इसलिए, यह शिक्षण उद्देश्य है, अगर आप चाहें, तो इसका बाकी हिस्सा इसका अनुसरण करने वाला है।

यह मुख्य विचार है, आप जिस तरह से स्थिति को समझते हैं, उसका यह उलटा है। जो कोई भी ऐसे बच्चे को प्राप्त करता है, और वह एक बच्चे को लेकर उनके बीच में रखता है और उसे अपनी बाहों में लेकर कहता है, जो कोई भी मेरे नाम पर ऐसे बच्चे को प्राप्त करता है, वह मुझे प्राप्त करता है। और जो कोई भी मुझे प्राप्त करता है, वह मुझे नहीं, बल्कि मुझे भेजने वाले को प्राप्त करता है।

अब मैं यहीं समाप्त करना चाहता हूँ, और हो सकता है कि हमारे पास बाकी नौ को करने के लिए समय हो। यदि नहीं, तो हम इसे अगले पाठ में उठाएँगे। मुझे यकीन है कि हम इसे अगले पाठ में उठाएँगे।

लेकिन मुझे लगता है कि हमें यह समझने की ज़रूरत है कि प्राचीन दुनिया में एक बच्चा क्या है और हम स्वाभाविक रूप से एक बच्चे के बारे में कैसे सोचते हैं। जब हम एक बच्चे के बारे में सोचते हैं, खासकर पश्चिम में, तो हम बच्चे को मासूमियत के एक आदर्श प्रदर्शन के रूप में सोचते हैं, जो बेदाग, क्षमतावान और तैयार है। कई मायनों में, प्राचीन दुनिया में एक बच्चे को सांस्कृतिक रूप से समान तरीकों से नहीं सोचा जाता था।

मैं पिता और पत्नी तथा उनके बेटे या बेटी की देखभाल के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि बच्चे, सामान्य रूप से, एक ऐसा समूह थे, जिनके पास कोई दर्जा नहीं था। बच्चे एक ऐसा समूह थे, जिनका कोई सामाजिक महत्व नहीं था। वे आश्रित थे; वे कमज़ोर थे, और वे योगदान देने में असमर्थ थे।

और इसलिए, जब हम देखते हैं, यीशु ने कहा है, वह शिष्यों के बीच इस तर्क के बीच इस अंतर के बारे में बात कर रहे हैं कि कौन सबसे बड़ा होने जा रहा है, और पहले और अंतिम के इस उलटफेर के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए, वह कुछ निर्दोष नहीं, बल्कि निम्न स्थिति और कम मूल्य का कुछ चुनता है। बच्चा सम्मान, शर्म की श्रेणी में एक निचले पंख की अभिव्यक्ति का आदर्श उदाहरण बन जाता है, अगर आप चाहें, जैसा कि दुनिया इसे समझेगी। और इसलिए, वह जो कहता है, वह है, जो कोई भी ऐसे बच्चे को प्राप्त करता है, और मुझे नहीं लगता कि इसका मतलब है कि जो कोई भी बच्चे प्राप्त करता है, लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ बच्चा रूपक है, शायद इसे व्यक्त करने का सबसे अच्छा तरीका है, या प्रतीक है।

जो कोई भी इस तरह की कम स्थिति को देखता है, जो कोई भी मेरे नाम में स्थिति के बारे में नहीं सोचता है, और मुझे लगता है कि यहाँ मेरे नाम का संदर्भ दिलचस्प है। क्या यह प्राप्त करने वाले को जाता है, या बच्चे को? यह एक बहस है। क्या यह वह है जो मेरे नाम पर है या मेरे नाम पर एक ऐसा बच्चा प्राप्त करता है, या वह है जो मेरे नाम पर एक ऐसा बच्चा प्राप्त करता है, जिसका अर्थ है कि बच्चे के साथ जुड़ा हुआ मेरा नाम?

मुझे लगता है कि यहाँ इसका अर्थ मेरे नाम की भाषा को एक बच्चे के साथ जोड़ना हो सकता है। दूसरे शब्दों में, जो कोई भी निम्न-स्थिति वाले व्यक्ति को स्वीकार करता है जो मेरा अनुयायी है, जो मेरा होने का दावा करता है, वह मुझे स्वीकार करता है। यह उस बात के बहुत करीब है जिसे हमने आमतौर पर यीशु को कहते हुए सुना है कि कैसे यीशु के अनुयायियों का स्वागत यीशु का स्वागत है।

और यीशु के अनुयायियों को अस्वीकार करना उसे अस्वीकार करना है। शिष्यों द्वारा लाए जा रहे संदेश को अस्वीकार करना उस व्यक्ति को अस्वीकार करना है जिसे संदेश घोषित करता है। यीशु अपने शिक्षण के दौरान लगातार अपने अनुयायियों के स्वागत और अस्वीकृति तथा अपने स्वागत और अस्वीकृति के बीच संबंध को जोड़ते हैं।

और मुझे लगता है कि इस संदर्भ में यही हो रहा है। यीशु यही कह रहे हैं कि जो कोई भी सामाजिक स्थिति में सबसे निचले दर्जे के लोगों को स्वीकार करता है, लेकिन जो मेरा अनुयायी होने का दावा करते हैं, वे मुझे स्वीकार कर रहे हैं। वे मसीहा को स्वीकार कर रहे हैं।

और इसके विपरीत, जो कोई भी मुझे स्वीकार करता है, जो कोई भी हाँ कहता है, मैं यीशु को अपनी उपस्थिति में स्वागत करता हूँ, वह मुझे नहीं, बल्कि उसे स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है, यहाँ पिता का संदर्भ दिया गया है। जब हम बच्चों और रूपक के बारे में सोचते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि हम इसे ध्यान में रखें क्योंकि मुझे लगता है कि हम जो देखने जा रहे हैं वह यह है कि यह सामाजिक स्थिति के बारे में है, न कि शुद्धता, मासूमियत और क्षमता के बारे में। मैं अध्याय 9 के बाकी हिस्सों को उठाना चाहता हूँ और जैसे ही हम अगली बार अध्याय 10 में आगे बढ़ेंगे।

धन्यवाद।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह मार्क 9:2-50, रूपांतरण, दुष्टात्मा से ग्रसित लड़का, शिष्यत्व पर सत्र 15 है।